व्यवस्था से टकराती स्त्री की आत्मकथा -कस्तूरी कुण्डल बसै

डॉ.गोविंद गुंडप्पा शिवशेट्टे
हिंदी विभाग
महाराष्ट्र महाविद्यालय,
निलंगा जिला लातूर ४१३५२१

मैत्रेयी पुष्पा इक्कीसवी सदी की अग्रणी लेखिकाओं में हैं। जिन्होने अपने लेखन द्वारा स्त्री वादी चिंतन को नई मूल्यवत्ता तथा अर्थवत्ता प्रदान करने का कार्य किया है ।मैत्रेयी के लेखन की विशेषता यह है कि स्त्री सबलीकरण के दौर में गाँव, आंचल विशेष की स्त्री को उपन्यास तथा कहानियों के जरिए ठोस तरिके से लाकर खडा किया है । मैत्रेयी पुष्पा का लेखन किसी व्यक्ति विशेष तथा जाति विशेष की समस्या को उद्घाटित नहीं करता बल्कि आंचल विशेष को केंद्र में रखकर आंचल की समग्रता को अत्यंत बारीकी से व्यक्त करता है । आंचलिक जन-जीवन की अभिव्यक्ति के कारण ही मैत्रेयी पुष्पा का नाम फणीश्वरनाथ रेणू, रांगेय राघव की श्रेणी में रखा जा रहा है । मैत्रेयी पुष्पा ने गाँव के अनपढ़ स्त्री जीवन को रेखांकित कर उसकी समस्याओं से पाठकों को रु-ब-रु कराया है । सामाजिक, धार्मिक दुरावस्था स्त्री-पुरुष असमानता, स्त्री पर होनेवाले अन्याय, अत्याचार, आँचल विशेष की समस्या, लोकगीत, लोककथा आदि को मैत्रेयी ने अपने रचनाओं में समेटा है ।

मैत्रेयी पुष्पा ने स्त्री विमर्श की विभिन्न आयामों को अत्यंत चिंतनपूर्वक रुप में उजागर किया है । इनकी रचनाओं का अध्ययन करे तो यह जान पडता हें कि मैत्रेयी का लेखन स्त्री स्वाधीनता का नया संविधान लिखने की दृष्टि से पहला कदम माना जा सकता है । जाननेवाले जानते है कि मैत्रेयी पुष्पा ने पहले विमर्शों को जिया है बाद में उन्हें लेखन में उतारा है । कितने रचनाकार है जो यह कर पाते है ,कथनी और करनी का यह अभेद ही उनकी प्रभावी, अपार, सृजनात्मक सफलता और सुयश का कारण है । प्राचीन काल से किस तरह स्त्री पर कब्जेदारी की कुप्रथाओं तथा कुप्रवृत्तियाँ बढ़ते गई। जिस समाज ने स्त्री को श्रम करने तथा बच्चे पैदा करने की मशीन मात्र समझा उस समाज की मान्यताओं को मैत्रेयी ख़ारीज कर स्त्री के मुक्ति की दाँवेदारी मजबुत करती है ।

मैत्रेयी पुष्पा की रचनाएँ उनके जीवन के अनुभवों की एक सशक्त कडियाँ है जिसके सहारे पाठक को स्त्री के संदर्भ में सोचने के लिए बाध्य किया है । हक्क और अधिकार किसी की जागीर न होकर उस पर स्त्री-पुरुष समानाधिकार है कि मान्यताओं को मैत्रेयी पुष्पा ने रचनाक्रम में उजागर किया है । मैत्रेयी के उपन्यासों के स्त्री चरित्र धार्मिक, सामाजिक, रुढ़ि-प्रथा, परंपराओं तथा कथाकथित मान्यताओं के प्रति विद्रोह करते हैं । त्याग और समर्पण के जगह मैत्रेयी के स्त्री चरित्र हक्क और अधिकार की चर्चा करते है । मैत्रेयी की यह विचारधारा तमाम पाठकों को वैचारिक उर्जा से लेस कराती हैं ।मैत्रेयी के उपन्यासों में चाक,इदन्नमम् ,झूलानट,गुनाह-बेगुनाह,कही ईसूरी फाग,अगनपाखी आदि महत्वपूर्ण है ।

कस्तूरी और बेटी मैत्रेयी पुष्पा के संघर्षशील चरित्र की गाथा है 'कस्तूरी कुण्डल बसै' आत्मकथात्मक उपन्यास है । राधारमण वैद्य इस रचना के संदर्भ में लिखते है - "यह विचित्र रचना है । आत्मकथा तो है ही उपन्यास के तत्वों से भी भरपूर है । मुख्य कथा माँ-बेटी के आपसी प्रेम, घृणा, लगाव और दुराव की अनुभूतियों से रचि गई है । इस कथा के अन्य अवयव भी है जिनसे दोनों के अन्य अनेक गुण-दोष, लगाव

विवशताएँ और साहस-संघर्ष भी प्रकट होते है ।"[१] स्वयं लेखिका इसे उपन्यास कहे या आपबीती प्रश्नचिन्ह के घेरे में है । आत्मानुभूति की इमान से अभिव्यक्ति करना आत्मकथा का निर्विवाद तत्व है । आत्मकथा लिखने का मादा वहीं रखता है जो अपने सत्य का असलियत में शब्दबद्ध करना जानता है । यद्यपि हिंदी में अनेक आत्मकथाएँ आई पर लेखन में जिस नैतिक साहस की और इमानदारी की जरुरत होती है वह कही-न-कही गायब है । मैत्रेयी की यह आत्मकथा एक ऐसी रचना है जिसमें लेखन का नैतिक साहस और ईमानदारी का दर्शन होता है।

'कस्तूरी कुण्डल बसै' मैत्रेयी पुष्पा के आत्मकथा का प्रथम खण्ड है जिसमें हमें दो हिस्से दिखाई देते है । एक माँ कस्तूरी के जीवन से संबंधित तो दूसरा मैत्रेयी के अपने जीवन से संबंधित । पहला हिस्सा कुछ देखा-सुना और कुछ अनुमानित है और दूसरा अंग मैत्रेयी का अंतरिक ऐवज है । इस संदर्भ में मैत्रेयी लिखती है - "यह है हमारी कहानी मेरी और मेरी माँ की कहानी । आपसी, प्रेम, घृणा, लगाव और दूर की । अनुभूतियों से रचि कथा में बहुत-सी बातें है जो मेरे जनम के पहले ही घटित हो चुकी थी...। अपनी बाल्यावस्था की बहुत सी घटनाएँ याद रही, बहुत-सी विस्मृत हो गई... कुछ घटनाओं का छोर पकड पा रही थी लेकिन क्रम भी टूटता था, जगह खाली रह जाती थी वह कल्पनाओं, अनुमानों से सूत्र जोड़ने पडे ।"[२] मैत्रेयी ने आत्मकथा को अलग-अलग घटना प्रसंगों में विभाजित किया है । १.) रे मन जाए, जहाँ तो हि भावे २.) उलट पवन कहाँ राखिए ३.) जिउ तरसै, तुम मिलन को, मन नाहि विसराम ४.) तुम पिंजरा मै सुअना तोरा ५.) हम घर साजन आए ६.) दुल्हनियाँ गावोरी मंगलाचार ७.) कैसे नीर भरे पनिहारी ८.) पानी में आँगन जरे ९.) जो घर जोर अपनौ इस रुप में मैत्रेयी ने प्रसंग का क्रम रुपायित किया है ।

आत्मकथा की शुरूवात होती है कस्तूरी की कथा से । कस्तूरी की कथा का प्रारंभ है विवाह के इन्कार से 'मैं ब्याह नहीं करुँगी । धीरे से कहीं गयी बात सभी के कानों में दहाड से गुंजी और माँ ने धीरे से कहा तू मर्यादा तोडने पर क्यों आमदा है। कस्तूरी को इस बात का डर है कि कहीं उसका पति मरेगा और उसे सती होना पडेगा। दरिद्रता का दानव आदमी को अति स्वार्थी और असंवेदनशील बनाता है। घर में बेहद गरीबी, जमींदारी प्रथा के अन्याय अत्याचारी, पिता का लगान न चुका सकने का दर्द और घर की तंगहाली का सामना कर अपने आप को असमर्थ पाकर घर छोडकर भाग गए पिता की पुत्री कस्तूरी का विवाह भाई ने नकद आठ सौ रुपये देकर कराया था । उपाध्याय की पुत्री पाण्डेय की बहू बनकर जाट बहुल सिर्कुरा में पहुच गयी । घर में सास नहीं और कोई भी नहीं । कस्तूरी को लगता है गाय-बैल, जेवर-अनाज जैसी बिकनेवाली वस्तु की तरह इस घर में वह लाई गई है इसीलिए उसे अपना विवाह दुःख और अपमान का विक्राल महोत्सव-सा लगता है । औरत को घर की चौखट लांघने की छुट न थी ऐसी प्रथाओं को चलते कस्तूरी ने अपने को घर के बाहर निकालकर स्वयं को संवारने का कार्य किया है । पढ़-लिखकर कस्तूरी ग्रामसेविका पद की नौकरी करने लगी । ससुर ने कस्तूरी का बखूबी साथ दिया । कस्तूरी ने ग्रामसेविका के पद से सहायक खण्ड विकास अधिकारी तक पदोन्नति की । इस व्यस्तता में बेटी मैत्रेयी को माँ के आंचल का साया और सुरक्षितता नहीं मिल सकी । अनेक राष्ट्रीय पुरस्कारों से सम्मानित होने वाली कस्तूरी अपने ही बेटी से दूर होती गयी ।

कस्तूरी शिक्षा को बेहद महत्व देनेवाली स्त्री है - "पढ़ो, सोचो और अपने पाँव खडे हो जाओ ।"[३] माँ कस्तूरी और बेटी मैत्रेयी के विचारों में अजब का अंतर है । माँ ब्याह को बेडियाँ मानकर इन्कार करती रही है तो बेटी आग्रह पूर्वक ब्याह करने की बात करती है । माँ अनुशासनप्रिय स्त्री तो मैत्रेयी अनुशासन

से मुक्त होना चाहती है । माँ नौकरी को सब कुछ माननेवाली तो बेटी नौकरी से बंधकर एकांगी जीवन जिना नही चाहती । माँ को पुरुषों पर बिल्कुल विश्वास नहीं तो बेटी का अपने सहपाठियों से गहरा लगाव है । माँ के विचारों से ठिक उलटा चलती है बेटी ।

अपने अकेलेपन और स्त्री होने के कारण मैत्रेयी को बचपन से ही लोगों की हवस का शिकार होना पडा । इंटर कॉलेज से प्राचार्य, माँ का बी.डी. ओ. या एकाउटंट, बस का ड्रायवर आदि ने करतब दिखाया है । इन घटनाओं से मैत्रेयी के बाल मानसिकता पर एक के बाद एक आघात होते गए जिसके जख्म मैत्रेयी के लेखन में यत्र-तत्र रुप में स्त्री चरित्रों द्वारा दिख पडते हैं ।

गाँव की साधारण-सी औरत कस्तूरी अपनी बेटी के विवाह के लिए जन्म पत्रिका के बजाय मार्कसीट ले जाती है और लडके वालों से मांगती भी है । कस्तूरी जहाँ जाती है वहाँ निपट अकेली ऐसे में उसे कहा भी जाता था - "कस्तूरी चार अक्षर पढ़ लेने से कोई तुम्हें मर्द नहीं मान लेगा । सनद सर्टिफिकेट दिखाने की बात तो दूर ही है, कोई अपने द्वारा झाकने भी न देगा ।"[४] कस्तूरी ऐसे बातों से आहत न होते हुए आखिर एक ऐसा वर खोजा जो पढ़ लिखकर डॉक्टर है जो दहेज की भी अपेक्षा न करनेवाला है । जो लडकी देखने के बाद कहता है - "आपको देख लिया इसलिए आपके बेटी से ब्याह का इरादा कर रहा हूँ ।"[५] कस्तूरी ने बेटी का ब्याह डॉक्टर से किया ।माँ कस्तूरी जिन बातों से मैत्रेयी को दूर रखना चाहती थी, मैत्रेयी ठीक उन्हीं बातों की ओर करीब जाती रही । माँ प्रेम को यहाँ केवल पुरुष यातना का रुप मानती है मैत्रेयी इसे जीवन का महत अंग मानकर कॉलेज के जीवन में ही प्रेमाकर्षण में जीती है । बचपन के साथी एदल्ला से शुरु हुई कहानी बाज बहादुर, शिवदयाल, नंदकिशोर, राघव, जगतसिंह और मदनमाधव तक चली है । राघव का पहला प्रेम पत्र, बाज बहादुर का बिछोह उसे कई बार याद आता है । मैत्रेयी अपने विवाह पूर्व दिनों के प्रसंगों को जिस साहस से कहती है । वह इस आत्मकथा की असलियत का प्रमाण है । युवा समीक्षक मनीषा के अनुसार - "आत्मकथा लिखने के लिए संघर्ष ही काफी नहीं, साहस भी चाहिए ।"[६] यह बात इस रचना की है । साहसिकता का एक ओर प्रमाण - "एकांत में मैं और नंदकिशोर खटिया तो दो पर रजाई एक ।"[७] यह रचना एक आत्मकथा मात्र नहीं बल्कि परिवर्तनवादी विचारों की मिसाल है ।

प्रस्तुत आप बीती में स्वाधीनता प्राप्ति के पूर्व स्त्री की दयनीयता को सामाजिक, धार्मिक परिवेश के द्वारा रेखांकित है । मैत्रेयी आजादी के बाद की स्त्री दशा, दिशा पर भी अत्यंत चिंतनपूर्ण लेखन करती है । आजादी के पचास साल बाद भी बच्ची का जन्म एक शोक दिवस, उत्साह खुशी और उत्सव का इन भरे हुए मुर्तों से क्या मेल ? मैत्रेयी कुदरत की नाइन्साफी का ब्यौरा देती है । औरत को जीवन मिला है वह भी एक अग्निपरीक्षा ही है - "मनुष्य के रुप में अगर सबसे कठिन चुनौति भरी जिंदगी को पाया है तो स्त्री ने । या कुदरत को ही उससे बैर था । या कि सृष्टि के कर्ता-धर्ता की ही कोई साजिश... मादा बनाने के बाद, मादा होने की सजा का नाम औरत धर दिया ।"[८] सृष्टि के कर्ता-धर्ताओं ने क्या कम साजिश की है कि जिसमें और बढ़ोत्तरी करता है हमारा धर्म और समाज । मैत्रेयी ने माँ कस्तूरी के माध्यम से स्त्री स्वाधीनता की माँग करने लगी है - "लाली तू तो यह बता कि देश आजाद किसने मान लिया ? औरतों की आजादी गुलाम पड़ी है । बस मर्दों का आजाद होना देश का आजाद होना है ? स्वतंत्रता संग्राम में औरतों ने लाठियाँ खाई उनकी स्वातंत्रता कब आएगी ? वे तो तुमने भी गायों की तरह लाठियों से हाक दी और खुंटों से बांध दी अब उनका रस्सा कौन खोले ?"[९] यह सच साबित हुआ की स्त्री की आजादी आना अभी शेष है । आज भी स्त्री चार दीवारों में कैद है ।

'कस्तूरी कुण्डल बसै' आत्मकथा कस्तूरी और मैत्रेयी के संघर्ष की दास्तान है जो संघर्ष करना अपना इति कर्तव्य मानती है - ''न जमीन न जल, न हवा न इज्जत, न आबरू । सब हमारे आस-पास घिरे मर्दों का है, जब चाहे बक्स दे, जब चाहे उतार दे पर हम फिर लढेंगे अपनी जान के लिए, अपनी इंद्रियों के लिए, अपने इन्सान होने के लिए ।''[१०] मैत्रेयी पुष्पा की यह रचना अत्यंत साहसिकता का परिचायक है जो स्त्री को स्त्री की अस्मिता, अपने मादा का परिचय करा देती है । पुरुष की वह बेडियाँ को तार-तार कर देती है । प्रत्येक पाठक को चाहे वह पुरुष हो चाहे स्त्री को परिवर्तन की राह दिखाता है । आलोच्य आत्मकथा कस्तूरी के स्वनिर्भर पुरुष रहित जीवन यापन को प्रस्तुत करती है । कस्तूरी मैत्रेयी को तथा तमाम स्त्री वर्ग को आत्मनिर्भरता के लिए प्रेरित करती है । माँ बेटी का आपसी प्रेम, घृणा, लगाव तथा विचारों की टकराहट को अभिव्यक्ति मिली है ।

संदर्भ ग्रंथ

१.संपा. दीक्षित दया, *मैत्रेयी पुष्पा : तथ्य और सत्य,* सिंह भाषा, *टटोलना स्याह अंधेरे को,* पृ.सं. ८६
२.संपा. दीक्षित दया, *मैत्रेयी पुष्पा : तथ्य और सत्य,* वैद्य राधारमण, *कस्तूरी कुण्डल बसै,* पृ.सं. १८२
३.पुष्पा मैत्रेयी, *कस्तूरी कुण्डल बसै,* पृ.सं. ०६
४.पुष्पा मैत्रेयी, *कस्तूरी कुण्डल बसै,* पृ.सं. १०६
५.पुष्पा मैत्रेयी, *कस्तूरी कुण्डल बसै,* पृ.सं. ६८
६.संपा. दीक्षित दया, *मैत्रेयी पुष्पा : तथ्य और सत्य,* पृ.सं. १८८
७.पुष्पा मैत्रेयी, *कस्तूरी कुण्डल बसै,* पृ.सं. ३०६
८.पुष्पा मैत्रेयी, *कस्तूरी कुण्डल बसै,* पृ.सं. २६७
९.पुष्पा मैत्रेयी, *कस्तूरी कुण्डल बसै,* पृ.सं. २६८
१०.पुष्पा मैत्रेयी, *गुड़िया भीतर गुड़िया,* निवेदन से उध्दृत

Aayushi International Interdisciplinary Research Journal
ISSN 2349-638X
www aiirjournal.com